

श्रीमद्भागवत स्कन्ध 8 अध्याय 15: बली द्वारा स्वर्ग-विजय

14 September 2026



अपने गुरुओं द्वारा पुनर्जीवित और उनके यज्ञ से सामर्थ्यवान बनकर, असुरराज बली स्वयं स्वर्ग की जगमगाती राजधानी पर चढ़ाई करते हैं — और देवता, एक बेहतर समय की प्रतीक्षा का परामर्श पाकर, उनके समक्ष चुपचाप हट जाते हैं।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवत विज्ञम में आपका पुनः स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिमयी यात्रा। अब वह महान कथा आरम्भ होती है — बली और भगवान के वामन-अवतार की कथा — जो उस प्रश्न से आरम्भ होती है जो राजा परीक्षित को उलझन में डालता है: परमेश्वर बली से तीन पग भूमि क्यों माँगें, और फिर उन्हें क्यों बाँधें?

अध्याय की जानकारी

- ग्रन्थ: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 8 (आठवाँ स्कन्ध)
- अध्याय: 15 (पञ्चदश अध्याय)

- अध्याय शीर्षक: बली द्वारा स्वर्ग की विजय
- मुख्य वक्ता: श्रीशुकदेव गोस्वामी, राजा परीक्षित से कहते हुए — इन्द्र तथा बृहस्पति के वचन सहित
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: भृगुओं का आश्रम; अमरावती, इन्द्र की स्वर्गीय राजधानी
- केन्द्रीय विषय: भृगुओं द्वारा पुनर्जीवित और सामर्थ्यवान बली की स्वर्ग पर चढ़ाई; बृहस्पति के परामर्श पर देवताओं का हटना; बली द्वारा तीनों लोकों की विजय
- प्रमुख श्लोक श्रेणी: स्कन्ध 8, अध्याय 15, श्लोक 1-36
- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

पिछले अध्याय का सन्दर्भ

चतुर्दश अध्याय में श्रीशुकदेव ने समझाया कि किस प्रकार मनु, ऋषि, इन्द्र और देवता परम पुरुष की आज्ञा में विश्व का प्रबन्धन करते हैं, जो प्रत्येक युग में अनेक रूपों से कार्य करते हैं। कॉस्मिक ढाँचा पूर्ण होने पर, वर्णन अब बली और भगवान के वामन-अवतार की प्रिय कथा की ओर मुड़ता है — वही कथा जिसका पूर्वाभास आगामी मन्वन्तरों के वृत्तान्त में दिया गया था।

राजा परीक्षित का प्रश्न

अध्याय कथा से नहीं, अपितु एक आश्चर्य से आरम्भ होता है। राजा परीक्षित पूछते हैं कि यह कैसे हो सकता है कि परमेश्वर, जो पूर्ण हैं और जिन्हें कुछ भी अभीष्ट नहीं, बली के पास एक भिखारी की भाँति तीन पग भूमि माँगने जाएँ — और फिर अपना प्रयोजन सिद्ध होने पर उस निर्दोष असुर को बाँध दें।

श्रीराजोवाच

बलेः पदत्रयं भूमेः कस्माद्भरिरयाचत ।

भूतेश्वरः कृपणवल्लब्धार्थोऽपि बबन्ध तम् ॥ १ ॥

एतद् वेदितुमिच्छामो महत्कौतूहलं हि नः ।

याच्चेष्टेश्वरस्य पूर्णस्य बन्धनं चाप्यनागसः ॥ २ ॥

श्रीराजोवाच बलेः पदत्रयं भूमेः कस्माद्भरिरयाचत भूतेश्वरः कृपणवल्लब्धार्थोऽपि बबन्ध तम् एतद् वेदितुमिच्छामो महत्कौतूहलं हि नः याच्चेष्टेश्वरस्य पूर्णस्य बन्धनं चाप्यनागसः

अर्थ: राजा ने कहा — समस्त प्राणियों के स्वामी श्रीहरि ने एक दरिद्र की भाँति बली से तीन पग भूमि क्यों माँगी; और अपना प्रयोजन सिद्ध होने पर भी उन्होंने उसे क्यों बाँधा? हम इसे जानना चाहते हैं, क्योंकि यज्ञों के पूर्ण स्वामी का माँगना, और फिर एक निर्दोष को बाँधना, हमारे लिए महान आश्चर्य है। (स्कन्ध 8, अध्याय 15, श्लोक 1-2)

श्रीशुकदेव, इस प्रश्न से प्रसन्न होकर, कथा को उसकी जड़ से आरम्भ करते हैं — उस क्षण से जब बली अपनी पराजय के पश्चात पुनः उठे।

बली भृगुओं द्वारा पुनर्जीवित और सामर्थ्यवान

श्रीशुकदेव स्मरण कराते हैं कि बली इन्द्र से युद्ध में परास्त हुए, अपने वैभव से वंचित, और यहाँ तक कि प्राणों से भी रहित हुए — और फिर भृगुओं, ऋषि भृगु के वंशजों, द्वारा, जिनके नेता उनके गुरु शुक्राचार्य थे, पुनर्जीवित किए गए। कृतज्ञता से उस महान असुर ने अपने गुरुओं की सम्पूर्ण भाव से सेवा की, उन्हें उनकी अभीष्ट सब वस्तुएँ अर्पित करते हुए।

श्रीशुक उवाच

पराजितश्रीरसुभिश्च हापितो

हीन्द्रेण राजन्भृगुभिः स जीवितः ।

सर्वात्मना तानभजद् भृगून्बलिः

शिष्यो महात्मार्यनिवेदनेन ॥ ३ ॥

श्रीशुक उवाच पराजितश्रीरसुभिश्च हापितो हीन्द्रेण राजन्भृगुभिः स जीवितः सर्वात्मना तानभजद् भृगून्बलिः शिष्यो महात्मार्यनिवेदनेन

अर्थ: श्रीशुकदेव ने कहा — हे राजन्, बली, जो इन्द्र से अपना ऐश्वर्य और यहाँ तक कि प्राण भी खो चुके थे, भृगुओं द्वारा पुनर्जीवित किए गए; और उस महान असुर ने, उनके शिष्य होकर, अपने सम्पूर्ण हृदय से उनकी उपासना की और उन्हें वह सब कुछ भेंट किया जो वे चाहते थे। (स्कन्ध 8, अध्याय 15, श्लोक 3)

उन पर प्रसन्न होकर भृगुओं ने उन्हें इन्द्र के योग्य एक भव्य अभिषेक से संस्कारित किया और विश्वजित यज्ञ के द्वारा भगवान की आराधना करने में उनकी सहायता की, जिसमें अपना सर्वस्व दान कर दिया जाता है। पवित्र अग्नि से एक स्वर्णमय रथ, इन्द्र के ही रंग के घोड़े, सिंह-चिह्नित ध्वजा, एक दिव्य धनुष, अक्षय बाणों से भरे दो तरकश, और एक कवच प्रकट हुए। उनके पितामह प्रह्लाद ने उन्हें कभी न मुरझाने वाले पुष्पों की माला दी, और उनके गुरु शुक्राचार्य ने एक शंख। इस प्रकार सुसज्जित होकर बली ने श्रद्धापूर्वक ब्राह्मणों की परिक्रमा की, उन्हें प्रणाम किया, प्रह्लाद से विदा ली, और अपने जगमगाते रथ पर आरूढ़ हुए, यज्ञकुण्ड में जलती अग्नि-से देदीप्यमान।



अपने गुरु भृगुओं से पुनर्जीवित और आशीर्वादित बली विश्वजित यज्ञ करता है, जिससे एक स्वर्ण रथ, दिव्य अस्त्र और कवच प्रकट होते हैं; प्रह्लाद उसे एक माला और शुक्राचार्य एक शंख प्रदान करते हैं (श्लोक 3-9)।

अपने गुरु भृगुओं द्वारा पुनर्जीवित और आशीर्वादित बली विश्वजित यज्ञ करते हैं, जिससे एक स्वर्णमय रथ, दिव्य शस्त्र और कवच प्रकट होते हैं; प्रह्लाद उन्हें माला और शुक्राचार्य एक शंख देते हैं (श्लोक 3-9)।

बली स्वर्ग पर चढ़ाई करते हैं

धन, बल और वैभव में अपने समान असुर सेनापतियों से घिरे और एक विशाल सेना का नेतृत्व करते हुए, बलशाली बली इन्द्र की सबसे समृद्ध राजधानी पर चढ़ आए, मानो स्वर्ग और पृथ्वी को हिलाते हुए। अमरावती अद्वितीय सौन्दर्य का स्थान थी — उसके नन्दन उद्यान पक्षियों की चहचहाहट और मत्त भ्रमरों की गुंजार से भरे, उसके कमल-सरोवर हंसों और सारसों से उज्ज्वल, उसकी विश्वकर्मा-निर्मित स्वर्ण-प्राचीरें, उसके स्फटिक द्वार, उसकी रत्न-जड़ी सड़कें, उसकी वायु दिव्य पुष्पों से सुगन्धित और संगीत तथा गान से जीवन्त। वहाँ केवल पवित्र प्रवेश कर सकते थे; क्रूर, कपटी, अभिमानी और लोभी को वहाँ स्थान न था। इस नगरी तक पहुँचकर बली ने उसे चारों ओर से घेर लिया और अपने गुरु द्वारा दिया वह शंख बजाया, जिसने इन्द्र के अन्तःपुर की स्त्रियों में भय भर दिया।





असुरों की विशाल सेना का नेतृत्व करते हुए बलशाली बली इन्द्र की स्वर्ण दिव्य राजधानी अमरावती पर चढ़ाई करता है, उसे चारों ओर से घेर लेता है, और अपना प्रचण्ड शंख बजाता है (श्लोक 10-23)।

असुरों की विशाल सेना का नेतृत्व करते हुए बलशाली बली इन्द्र की स्वर्णमयी राजधानी अमरावती पर चढ़ाई करते हैं, उसे चारों ओर से घेरते हैं, और अपना महान शंख बजाते हैं (श्लोक 10-23)।

इन्द्र बृहस्पति से परामर्श करते हैं, और देवता हट जाते हैं

बली के आक्रमण की गम्भीरता को भाँपकर इन्द्र अपने गुरु बृहस्पति के पास गए और पूछा कि उनके पुराने शत्रु ने ऐसी अजेय शक्ति कहाँ से पाई। बृहस्पति ने उत्तर दिया कि बली भृगुओं की आध्यात्मिक ऊर्जा से भर गए हैं, जिन्होंने अपनी शक्ति अपने निष्ठावान शिष्य में संचारित कर दी है। स्वयं परमेश्वर के अतिरिक्त, उन्होंने कहा, अब कोई बली के समक्ष खड़ा नहीं हो सकता। अतः उन्होंने देवताओं को परामर्श दिया कि वे स्वर्ग छोड़कर दृष्टि से ओझल रहें, भाग्य के अनुकूल फेर की प्रतीक्षा करते हुए।

इस प्रसंग के मूल में यही सिद्धान्त है: सम्पूर्ण विश्व के समक्ष किसी जीव का बल उस बल के आगे कुछ भी नहीं जो एक प्रसन्न सद्गुरु से प्रवाहित होता है। बली अपने पराक्रम से इन्द्र को पराजित नहीं कर सकते थे; उनकी अजेयता पूर्णतः उधार ली हुई थी, शुक्राचार्य और भृगुओं द्वारा उनमें संचारित, क्योंकि उन्होंने बिना किसी सीमा के स्वयं को उनकी सेवा में समर्पित कर दिया था। इसीलिए बृहस्पति इन्द्र को अपनी शक्ति बली के विरुद्ध आजमाने की सलाह नहीं देते, अपितु यह पहचानने की कि केवल परमेश्वर का अपना बल ही — किसी से उधार लिया बल कभी नहीं — ऐसी शक्ति का प्रत्यक्ष सामना कर सकता है। यही शिक्षा प्रत्येक भक्त के लिए भी है: वास्तविक उन्नति कभी अकेले व्यक्तिगत प्रयास से नहीं मिलती, अपितु गुरु की कृपा के रूप में प्राप्त होती है, और उसे एक धरोहर की भाँति सम्भालना चाहिए, अपनी उपलब्धि मानकर नहीं (श्लोक 28)।

एष विप्रबलोदर्कः सम्प्रत्यूर्जितविक्रमः ।

तेषामेवापमानेन सानुबन्धो विनङ्क्ष्यति ॥ ३१ ॥

एष विप्रबलोदकः सम्प्रत्यूर्जितविक्रमः तेषामेवापमानेन सानुबन्धो विनङ्क्ष्यति

अर्थ: उसका पराक्रम, जो अब चरम पर है, ब्राह्मणों की शक्ति से उत्पन्न हुआ है; फिर भी उन्हीं ब्राह्मणों का अपमान करके वह एक दिन अपने समस्त अनुयायियों और वैभव सहित नष्ट हो जाएगा। (स्कन्ध 8, अध्याय 15, श्लोक 31)

वस्तुओं को उनके यथार्थ रूप में देख सकने वाले इस बुद्धिमान परामर्श को मानकर देवता — जो इच्छानुसार कोई भी रूप धारण कर सकते थे — स्वर्ग से चले गए और दृष्टि से ओझल हो गए।



इन्द्र अपने गुरु बृहस्पति से परामर्श करते हैं, जो बताते हैं कि बली की शक्ति भृगुओं के आशीर्वाद से है और देवताओं को स्वर्ग छोड़कर उत्तम समय की प्रतीक्षा करने का परामर्श देते हैं (श्लोक 24-32)।

इन्द्र अपने गुरु बृहस्पति से परामर्श करते हैं, जो प्रकट करते हैं कि बली की शक्ति भृगुओं के आशीर्वाद से आती है और देवताओं को स्वर्ग से हटकर बेहतर समय की प्रतीक्षा करने का परामर्श देते हैं (श्लोक 24-32)।

बली तीनों लोकों को जीत लेते हैं

देवताओं के चले जाने पर विरोचन-पुत्र बली ने अमरावती पर अधिकार कर लिया और तीनों लोकों को अपने वश में कर लिया। उनके गुरुओं ने, स्नेह से भरकर, उनसे अपने राज्य को स्थिर करने के लिए एक सौ अश्वमेध यज्ञ करवाए, और उनका यश लोकों में तथा उनसे परे फैल गया, जिससे वे तारों में चन्द्रमा-से चमक उठे।

बुभुजे च श्रियं स्वृद्धां द्विजदेवोपलम्बिताम् ।

कृतकृत्यमिवात्मानं मन्यमानो महामनाः ॥ ३६ ॥

बुभुजे च श्रियं स्वृद्धां द्विजदेवोपलम्बिताम् कृतकृत्यमिवात्मानं मन्यमानो महामनाः

अर्थ: और उदारमना बली ने, स्वयं को अपने समस्त प्रयोजन सिद्ध किए हुए मानते हुए, उस प्रचुर सम्पदा का भोग किया जो ब्राह्मणों, द्विजों में पूज्य, द्वारा उन्हें प्रदान की गई थी। (स्कन्ध 8, अध्याय 15, श्लोक 36)

इस प्रकार मंच सज जाता है। बली शक्ति और समृद्धि के शिखर पर खड़े हैं, सन्त पुरुषों से आशीर्वादित और अपनी विजय में मानो पूर्ण — और ठीक यहीं, असुरराज के भाग्य की चरम सीमा पर, भगवान शीघ्र ही दिव्य वामन रूप में प्रकट होंगे।



अमरावती पर अधिकार कर और सौ अश्वमेध यज्ञ सम्पन्न कर बली तीनों लोकों पर वैभव से शासन करता है, तारों के बीच चन्द्रमा के समान शोभायमान, और ब्राह्मणों की कृपा से प्राप्त समृद्धि का भोग करता है (श्लोक 33-36)।

अमरावती पर अधिकार कर और एक सौ अश्वमेध यज्ञ कर, बली तीनों लोकों पर वैभव से शासन करते हैं, तारों में चन्द्रमा-से चमकते हुए और ब्राह्मणों द्वारा प्रदत्त सम्पदा का भोग करते हुए (श्लोक 33-36)।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. सन्त पुरुषों का आशीर्वाद विशाल शक्ति देता है। बली की अजेय शक्ति स्वयं से नहीं, अपितु भृगुओं की आध्यात्मिक ऊर्जा से आई। सन्तों की सेवा और सम्मान अपने से बड़ी शक्ति पाना है (श्लोक 3, 28)।
2. अपने सर्वस्व का समर्पण भगवान की कृपा को आमन्त्रित करता है। बली ने विश्वजित यज्ञ में सब कुछ दान कर दिया, और उसी समर्पण से उनका वैभव आया। जो हम पूर्णतः भगवान को अर्पित करते हैं वह हमें बहुगुणित होकर लौटता है (श्लोक 4)।
3. बुद्धि जानती है कि कब हटना है। बृहस्पति ने देवताओं को वह युद्ध न लड़ने का परामर्श दिया जिसे वे जीत नहीं सकते थे, अपितु बेहतर समय की प्रतीक्षा करने का। धैर्य और सही समय स्वयं में एक शक्ति हैं (श्लोक 30-32)।
4. कृपा से पाई शक्ति अभिमान से खो सकती है। बृहस्पति ने पूर्वाभास किया कि बली एक दिन उन्हीं ब्राह्मणों का अपमान करके गिरेंगे जिन्होंने उन्हें उठाया। हमारे आशीर्वादों के स्रोत का कभी अनादर नहीं करना चाहिए (श्लोक 31)।

5. सांसारिक विजय कभी वस्तुतः पूर्ण नहीं होती। बली ने सोचा कि उन्होंने अपने समस्त प्रयोजन सिद्ध कर लिए, फिर भी उनके जीवन का सबसे बड़ा मोड़ अभी आना शेष था। कोई सांसारिक विजय अन्तिम शब्द नहीं (श्लोक 36)।

एक भक्तिमय चिन्तन

यह उल्लेखनीय है कि यह अध्याय, जो बली के पतन की कथा को गति देता है, अपनी अधिकांश लम्बाई उनके उत्थान का वर्णन करने में लगाता है। हम उन्हें अपने गुरुओं द्वारा पुनर्जीवित होते, यज्ञ से सामर्थ्यवान बनते, वैभव में चढ़ाई करते, स्वर्ग जीतते देखते हैं — और ठीक उसी क्षण जब वे मानते हैं कि उन्होंने सब कुछ प्राप्त कर लिया, श्रीशुकदेव चुपचाप स्मरण कराते हैं कि उन्होंने केवल ऐसा सोचा। यहाँ हम सबके लिए एक कोमल चेतावनी है जो अपने जीवन को उपलब्धि से मापते हैं। बली दुष्ट पुरुष नहीं थे; वे उदार थे, अपने गुरुओं के प्रति निष्ठावान, अपना सर्वस्व दान करने को तत्पर। उनकी शक्ति सच्ची कृपा से आई। और फिर भी ऐसा व्यक्ति भी सांसारिक सफलता के शिखर को जीवन का लक्ष्य समझने की भूल कर सकता है। भागवत बली को उनकी विजय के लिए दोष नहीं देता; वह बस हमें अनुभव करने देता है कि वह विजय कितनी अपूर्ण है, ताकि जब भगवान उनके पास तीन पग भूमि माँगते एक छोटे ब्राह्मण बालक रूप में प्रकट हों, तो हम यह देखने को तैयार हों कि जो बली का विनाश-सा दिखता है वह वस्तुतः उनका सबसे बड़ा आशीर्वाद है। जिन ऊँचाइयों तक हम पहुँचते हैं वे कभी गन्तव्य नहीं। सच्चा उपहार वह एक है जो वहाँ हमसे मिलने आते हैं।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज यदि आप स्वयं को किसी सफलता या उपलब्धि से अपना मूल्य मापते पाएँ, तो रुकें और उसे कोमलता से अधिक हल्के से थामें, तीनों लोकों के शिखर पर खड़े बली को स्मरण करते हुए — जिन्होंने सोचा कि उन्होंने सब कुछ प्राप्त कर लिया, और जिनका सच्चा आशीर्वाद अभी आना शेष था। अपनी उपलब्धियों को “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय” के शब्दों से भगवान को अर्पित करें, उनके पीछे की कृपा के लिए उन्हें धन्यवाद देते हुए और यह प्रार्थना करते हुए कि वे कभी अभिमान का स्रोत न बनें। जिस ऊँचाई तक आप पहुँचें वह आपको उन्हें भुलाने न दे जो आपको उठाते हैं।

उपसंहार

आठवें स्कन्ध का पञ्चदश अध्याय बली को सांसारिक वैभव के शिखर तक उठते हुए दिखाता है — किन्तु इसकी वास्तविक शिक्षा यह है कि ऐसी विजय, चाहे कितनी ही चकाचौंध भरी हो, फिर भी किसी और महान वस्तु की प्रतीक्षा करती है जो उसे पूर्ण करे। बली केवल सोचते हैं कि उन्होंने अपने समस्त प्रयोजन सिद्ध कर लिए; उनके जीवन की सच्ची पूर्णता तो स्वयं भगवान हैं, जो दिव्य वामन रूप में कथा में प्रवेश करने ही वाले हैं। इससे हम यह सीखें कि हम जो भी सफलता पाएँ उसे खुले हाथों से थामें, उसे उसी एक को अर्पित करते हुए जो अकेले उसे पूर्ण करते हैं। अगला अध्याय देवताओं की शोकाकुल माता अदिति की ओर मुड़ता है, और उस पवित्र व्रत की ओर जिससे वे परमेश्वर को अपना ही पुत्र बनने के लिए आकर्षित करेंगी।

श्रीमद्भागवत का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जाग्रत करे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ एवं आभार

- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण), आठवाँ स्कन्ध, पञ्चदश अध्याय, पृष्ठ 795–800।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज्ञान · विश्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुरूप प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, निष्ठापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण में दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश-रूप में हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद अथवा भाष्य का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक से किसी सम्बद्धता अथवा उसके अनुमोदन का संकेत नहीं किया गया है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-8-chapter-15-bali-conquers-the-heavens-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञान · कल्कि अवतार इंटरनेशनल · बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

